आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका
विद्यावार्ता™

Rayat Shikshan Sanstha's

Prof. Dr. N. D. Patil Mahavidyalaya, Malkapur (Perid)

One Day National Interdisciplinary Conference

On

Recent Trends and Issues in Languages, Social Sciences and Commerce

Saturday, 4th January, 2020

Organized by

Department of English, Hindi, Marathi, Economics, History, Commerce and IQAC

Date of Publication
04 Jan. 2020

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www.विद्यावार्ता.कॉम

YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary.

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 6.021 iijif FACTOR

Cosmos
IMPACT FACTOR
5.234

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

http://www.printingarea.blogspot.com

सामाजिक संवेदना : 'कथांतर ' उपन्यास के संदर्भ में

प्रा. डॉ. नेहा अनिल देसाई.

महिला उपन्यासकार उषा यादव का 'कथांतर ' उपन्यास सन २००4 में प्रकाशित है । उषा यादव हिंदी साहित्य में बालसाहित्यकार के रूप में ख्यात है । वर्तमान परिवेश का चित्रण और अनुभवों की वैचारिक अभिव्यक्ति उनके लेखन की विशेषता है । साहित्य के माध्यम से सामाजिक कल्याण के और हितकारी मूल्यों का विचार अभिव्यक्त करती है । उनकी रचना दृष्टी सामाजिक दायित्व का निर्वाह करने में अग्रणी थी । प्रस्तुत उपन्यास का नायक देवेंद्र के माध्यम से समाज के हितकारी कार्य को स्पष्ट किया है ।

वीरेंद्र प्रकाश शर्मा के अनुसार सामाजिक का अर्थ है, " वो जीव जो परस्पर सामाजिक अंतर्क्रिया करते हैं, समूह में साथ – साथ रहते है, समाजप्रिय आश्रित एवं सहकारी है, समूह के कल्याण एवं हितों के प्रति जागरूक है, सामाजिक कहलाते है। " (वीरेंद्र प्रकाश शर्मा– समाजशास्त्र विश्वकोश पृ. जयपुर , पंचशील प्रकाशन प्र.सं. २०११ पृ. २४२) प्रामाणिक हिंदी कोश के अनुसार संवेदना का अर्थ है, " मन में होनेवाला बोध या अनुभव, अनुभूति ही संवेदना है । " (रामचंद्र वर्मा – प्रामाणिक हिंदी कोश बनारस , हिंदी साहित्य कुटीर) , (साहित्य – रत्नमाला कार्यालय, प्र.सं. २००८ पृ. ८१३ (http//epustakalay.com.Date-17/12/2019) इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य के अनुभूति की अभिव्यक्ति सामाजिक उददेश्य की परिपूर्ति करने में सहायक सिद्ध होती है। व्यक्ती समाज के नीति–नियमों से परिचालित होता है। इसकारण संवेदनशील व्यक्ति समाज में स्थित समस्याएँ दुख दूर करने का प्रयास करता है।

प्रस्तुत उपन्यास का नायक देवेंद्र के माध्यम से सामाजिक संवदेना का विचार एवं कार्य को प्रस्तुत किया है । सुदर्शनसिंह और दर्शनसिंह सांमती परिवार के है। सुदर्शनसिंह किसान की बेटी गंगा से विवाह करते है और उनकी अल्प काल में मृत्यु होती है । गंगा युवावस्था में ही विधनवा जीवन की उपेक्षित और दयनीय स्थितियों का सामना करती है। दर्शनसिंह दरोगा है और उनके बच्चों को संभालने की जिम्मेदारी गंगा स्वीकारती है। दर्शनसिंह गंगा के जेठ होकर भी उसपर अत्याचार करते है। जेठ की हवस का शिकार बनी गंगा देवेंद्र को जन्म देती है। दर्शनसिंह गंगा के बेटे को न अपनाते हुए उसपर ही बदचलन का दाग लगाते है। देवर के खैर के कारण गंगा पूरी तरह टूट जाती है । गंगादर्शन की बडी बेटी शारदा से बिनंती करती है, " मेरी और देबू की हालत इस घर में दाँतों के बीच फँसी जीभ जैसी है। मैं तो जैसे – तैसे दिन काट लूँगी, पर देबू का रोयाँ भी न दुखे, यह चाहती हूँ । तुम उसे अपने साथ ले जाओ । इस बकसिया में मेरा चढावे का जेवर है। जमींदार घराने की मर्यादा के अनुसार चढा था, काफी कीमती होगा । इससे तुम्हें देबू की पढाई में मदद मिलेगी। " (उषा यादव – कथांतर , दिल्ली, दुसरी मंजिल की, बी–१०९ प्रीत विहार प्र.सं. २०११' पृ–२२८)देवेंद्र नाजायज बेटे के रूप में शारदा के परिवार में बडा हो गया इसी बीच गंगा भी आत्महत्या कर लेती है । देवेंद्र ने माँ की उपेक्षित और दुखभरी जिंदगी देखकर अपने जीवन का मकसद बनाया है वह अपना घर न बसाकर उपेक्षित , समस्याग्रस्त स्त्री की सहायता कर उनके जीवन – सुधार करने के लिए सहायता करेगा ।

देवेंद्र ने माला, और नीलू की पढ़ाई और आर्थिक निर्भरता के लिए सहायता की है। माला का पति तांत्रिक , शराबी और तंत्रविद्या अर्जन के लिए पत्नी पर प्रयोग करता था। माला आर्थिक विवशता से तंग आकर आत्महत्या का प्रयास करती है। उसी समय देवेंद्र उसे बचाकर अपनी रसोई की जिम्मेदारी सौंपते है साथ–साथ उसे पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित कर अध्यापिका बनाते है। माला के चार बच्चों की पढ़ाई का खर्चा भी करते है। माला आत्मनिर्भर हो जाने के बाद पिता की तरह देवेंद्र को सँभालना चाहती है लेकिन वे यह स्वीकार नहीं करते है।

देवेंद्र यात्राओं में मिली समाजसुधारक सविता की नौकरानी की व्यथा भी सुनते है। मणि विधवा है और जीवनयापन के लिए सविता के यहाँ काम करती है। अपने एकमात्र बेटे पलाश को पढ़ाना चाहती है। सविता पलाश को पढ़ाई न देकर मजदूरी करने के लिए भेजने की सलाह देती है। मणि को देवेंद्र जी दिल्ली बुलाते है । अपने नजदिकी दोस्त को मणि और पलाश को ले आने के लिए कानपूर भेजते है। पलाश की पढ़ाई का इंतजाम करते है । इसीप्रकार

पडोस में रहनेवाली नीलू की उच्च शिक्षा की पढ़ाई में आर्थिक सहायता करते है। समाज में अंधश्रध्दा के कारण पीडित स्त्री और छोटी बच्चियों को छुडाने का कार्य करते है। देवेंद्र की सद् प्रवृत्तियों के कारण समस्याग्रस्त को सहायता मिलती थी । देवेंद्र ने माँ के दुख को देख कर उसी कि तरह प्रताडित, पारिवारिक दुखों से पीडित नारीयों की संवेदना को पहचानकर सहायता कर जीवन सुधार का प्रयास किया। देवेंद्र जी के नैतिक मूल्यों एवं जीवन की उदात्तवादी विचारधारा के बारे में कथन दृष्टव्य है," व्यक्ति के व्यक्तित्व में अतीत, वर्तमान और भविष्य इन तीनों का महत्व होता है। अतीत परंपरा के रूप में मानसिक धरातल पर होना है और वर्तमान को प्रभावित करता है। हम वर्तमान में जीते है और भविष्य की कल्पना करते हैं। जिन पर परंपरांओं का प्रभाव अधिक होता है और जिनमें स्वंतत्र चिंतन की क्षमता नहीं होती वे परंपरागत जीवन पद्धति को ही सार्थक मानते हैं। कुछ लोग स्वंतत्र चिंतन करते है। और गलत परंपराओं के विरोध में संघर्ष करते हैं वे विद्रोही कहलाते हैं । " (डॉ. मंगल कप्पीकेरे– साठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में नारी, कानपुर , विकास प्रकाशन , ३११ सी, विश्व बैंक बर्रा प्र.सं. २००२ पृ. १०९)

इसीप्रकार देवेंद्र का व्यक्तित्व विद्रोही था । समाज सुधार के प्रयासोां में अपराधी मनोवृत्ति का आचरण रखनेवाला माला का पति, समाजसेविका का पाखंड निर्माण करनेवाली सविता और अंधश्रध्दा फैलकर अविश्वास फैलाने वाले स्वार्थ में लिप्त व्यवस्था का विरोध करते है। सामाजिक संवेदना में देवेंद्र ने स्त्री का आत्मसम्मान जगाया और प्रतिष्ठा बढ़ाने का कार्य किया।

देवेंद्र का निजी जीवन भी संवेदन शून्य था । वे नाजायज बेटे के रूप में पलने के कारण आर्थिक विवशता, पारिवारिक प्रेम, अपनापन की भावनाएँ सामाप्त हो गई थी। उन्होंने पढाई खत्म कर शारदा बहन सेमिलने के लिए जाने से सोचा तब उनकी मृत्यु हो चुकी थी। आजीवन बच्चों के लिए भविष्य निर्माण करने में सहायता करनेवाले पिता उनके हिस्से में नहीं आए थे। दर्शनसिंह की बीमारी के समय देवेंद्र अस्पताल में पहुँचते है। उनकी अंतिम सांसे चल रही थी और वे नाजायज बेटे से माफी माँग रहे थे मुक्ति चाह रहे थे । देवेंद्र अपना दुख भूलकर कहते है, " खैर इन्होंने बेटे के प्रति भले ही अपना दायित्व न निभाया हो, मैं पिता के प्रति अपना दायित्व जरूर निभाऊँगा। ईश्वर को साक्षी मानकर सच्चे मन से प्रतिज्ञा करता हूँ कि इनके बचे–खुचे पापों का प्रायश्चित आज से मैं करूँगा । इसी जन्म में इसी देह से जितना कुछ इन्होंने भोग लिया उसके बाद अब परमात्मा इन्हें मुक्ति दे । " (उषा यादव – कथांतर , दिल्ली, दूसरी मंजिल , बी–१०९, प्रीत विहार प्र.सं. २०११ पृ. २३९ –२४०) दर्शनसिंह देवेंद्र को बेटे का और गंगा को पत्नी का आजीवन अधिकार नही देते है। लेकिन मृत्यू की कगार पर खडे होने के बाद अन्यायी वर्तन का विश्लेषण करते है । देवेंद्र पिताजी के अपराध बोध से मुक्ति की प्रार्थना करते है। अन्याय के प्रति विद्रोही बननेवाले पिता को माफ करते है। परंपरा और विद्रोह के बीच सामाजिक संतुलन का निर्माण करते है।

निष्कर्षत: सामाजिक नैतिक– अनैतिक संवेदनाओं के बीच मानवता का और नारी के प्रति उदात्त मानसिकता का विचार व्यक्त करते है। परंपरागत रूप से पुरूष द्वारा नारी का शोषण होता है मगर सामाजिक संवेदना की जागृति से जीवन सुधार की अनिवार्यता स्पष्ट की है। अंधविश्वास एवं परंपराओं की मान्यताओं में स्त्री का जीवन पीसता है उसमें सुधार लाने के प्रयास की ओर दिशा निर्देशन किया है। पारिवारिक मर्यादा के परंपरागत मूल्यों एवं व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण स्त्री का जीवन नारकीय अनुभवों में परिवर्तित होता है। पुरूष प्रधान समाज में स्त्री की नियति, नैतिक मूल्यों का दवंदवं और उससे उत्पन्न संघर्ष का यथार्थ स्पष्ट किया है। समाज में बुदधिजीवी वर्ग द्वारा सेवाभवना की आवश्यकता को अधोरेखित किया है।